मूल्य - 5 रु.

Tara

तारांशु

मासिक
मार्च - 2019
वर्ष 7, अंक 6, पृ.सं. 20

जीवन :
पहले एवं तृप्ति योजना
(वृद्धों के द्वार पर राशन पहुँचाना)
लाभ के बाद

आनन्द वृद्धाश्रम :

"आनन्द वृद्धाश्रम भविष्य निधि योजना"

तारा संस्थान के आनन्द वृद्धाश्रम में रहने वाले बुजुर्गों की निरंतर भोजन सेवा, चिकित्सा हेतु भविष्य निधि (Corpus Fund) में सहयोग देवें।

वृद्धजन सहयोगी "शांति"
रु. 1,00,000/-

वृद्धजन सहयोगी "शक्ति"
रु. 51,000/-

वृद्धजन सहयोगी "आस्था"
रु. 21,000/-

आपके सहयोग की ब्याज राशि से वृद्धाश्रम के कार्य चलायमान रहेंगे।

आनन्द वृद्धाश्रम सेवा (प्रतिबुजुर्ग)
01 वर्ष - 60000 रु., 06 माह - 30000 रु., 01 माह - 5000 रु.

तारा नेत्रालय :

रोशनी : बच्चों के नेत्र शिविर

तारा संस्थान की इस नवीन योजना के अन्तर्गत स्कूलों में नेत्र जाँच शिविर लगाकर चेकअप कर, उन्हें मुफ्त में चश्मे दिए जाते हैं। यदि किसी बच्चे को Cataract का Diagnosis होता है तो उनका तारा नेत्रालय में निःशुल्क ऑपरेशन किया जाता है।

रोशनी : बच्चों के नेत्र शिविर सौजन्य
200 बच्चे - 15000 रु., 400 बच्चे - 30000 रु., 2000 बच्चे - 150000 रु.

उपर्युक्त राशि द्वारा बच्चों की नेत्र जाँच, निःशुल्क चश्मे एवं स्टेशनरी वितरण शामिल है।

''तारा संस्थान, उदयपुर''
राजस्थान रजिस्ट्रीकरण प्रमाण-पत्र क्रमांक:
31/उदयपुर/2009-10 दिनांक 25 जून, 2009
द्वारा पंजीकृत है।

आशीर्वाद
डॉ. कैलाश 'मानव'
संस्थापक एवं प्रबन्ध न्यासी,
नारायण सेवा संस्थान (ट्रस्ट), उदयपुर

आभार
श्रीमती पुष्पा - श्री एन.पी. भार्गव
मुख्य संरक्षक, तारा संस्थान,
उद्योगपति एवं समाजसेवी, दिल्ली

श्रीमती शमा - श्री रमेश सचदेवा
संरक्षक, उद्योगपति एवं समाजसेवी, दिल्ली

श्रीमती सुषमा - श्री सत्यभूषण जैन
संरक्षक, प्रमुख समाजसेवी, दिल्ली

श्री जे.पी. शर्मा
संरक्षक, समाजसेवी एवं शिक्षाविद्, दिल्ली

श्रीमती सुमन - श्री अनिल गुप्ता (ISKCON)
संरक्षक, उद्योगपति एवं समाजसेवी, दिल्ली

श्रीमती प्रेम निझावन
समाजसेवी, दिल्ली

प्रकाशक एवं सम्पादक
कल्पना गोयल

दिग्दर्शक
दीपेश मित्तल

कार्यकारी सम्पादक
तरुण सिंह राव

ले-आउट व ग्राफिक डिजाइनर
गौरव अग्रवाल

मुखपृष्ठ फोटो
तारा स्टाफ

तारांशु - वर्ष 7, अंक - 6, मार्च - 2019

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ संख्या
आनन्द वृद्धाश्रम भविष्य निधि योजना / रोशनी : बच्चों के नेत्र शिविर	02
अनुक्रमणिका	03
लेख 1 : गेहूँ के दाने	04
लेख 2 : ऐ मेरे वतन के लोगों	05
तारा संस्थान की तृप्ति योजना : लाभ से पूर्व एवं लाभ के बाद की स्थिति	06-09
पढ़निय	10
आनन्द वृद्धाश्रम / गौरी योजना	11
तारा नेत्रालय	12
शिखर भार्गव पब्लिक स्कूल - उदयपुर	13
मस्ती की पाठशाला / आनन्द वृद्धाश्रम में होली	14
आँखों से संबंधित रोग	15
विनम्र अपील	16
नेत्रालय मासिक अपडेट्स : मोतियाबिन्द जाँच शिविर	17
धन्यवाद / अभिनन्दन	18
सम्पर्क सूत्र - तारा संस्थान	19

आशीर्वाद - डॉ. कैलाश 'मानव' संस्थापक - नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

श्रीमती कल्पना गोयल (दाएं) अपने पूज्य पिता डॉ. कैलाश ''मानव''
तथा श्रीमती कमला देवी अग्रवाल की सन्निधि में,
साथ में संस्थान सचिव श्री दीपेश मित्तल (बाएं)

'तारांशु' – स्वत्वाधिकारी, श्रीमती कल्पना गोयल द्वारा 240–ए, हिरण मगरी, सेक्टर – 6, उदयपुर (राज.) 313002 से प्रकाशित तथा मुद्रक श्री सत्यप्रकाश कुमार शर्मा द्वारा सागर ऑफसेट प्रिन्टर, इण्डिया प्रा. लि. प्लॉट नं. 518, इकोटेच – III, उद्योग केन्द्र एक्टेंशन – II, ग्रेटर नोएडा, गौतम बुद्ध नगर (उत्तर प्रदेश) में मुद्रित, सम्पादक – श्रीमती कल्पना गोयल

गेहूँ के दाने...

एक कहानी सुनी थी जो कुछ इस प्रकार थी। एक राजा के 3 बेटे थे, राजा बहुत ही सोच में रहते थे कि इनमें से किसे अपना उत्तराधिकारी बनाऊँ क्योंकि वे चाहते थे कि सबसे श्रेष्ठ ही उनके बाद राजा बने। उनकी चिंता जब उन्होंने अपने गुरु को बताई तो गुरुजी ने राजा को एक तरकीब बताई। राजा ने अपने तीनों बेटों को बुलाया और उन्हें एक–एक बोरी गेहूँ दिया और कहा कि मैं एक साल के लिए बाहर जा रहा हूँ और ये गेहूँ तुम्हें संभाल कर रखने हैं। इनमें एक रत्ती भी कम नहीं होना चाहिये जिनके भी थोड़ा गेहूँ कम होगा वो राजा बनने के योग्य नहीं माना जाएगा। राजकुमार चिंतित हो गए। एक राजकुमार ने तो उस बोरी को एक कमरे में रखवा कर बाहर बड़ा ताला लगा दिया और दो चौकीदार बिठा दिए। दूसरे राजकुमार ने उन गेहूँ को एक संदूक में रख दिया और उसमें नीम के पत्तों का चूरा मिला दिया जिससे उनमें कीड़े नहीं लगे। तीसरे राजकुमार ने एक खेत तैयार कराया और उसमें गेहूँ उगा दिए। राजा वापस आया पहले राजकुमार के गेहूँ सड़ चुके थे, उनमें कीड़े पड़ गए थे दूसरे राजकुमार ने शान से संदूक खोला तो उसमें गेहूँ तो सही सलामत थे लेकिन उनमें नीम की कड़वाहट आ गई थी। राजा ने तीसरे से पूछा तो वो राजा को बाहर खेत पर ले गया वहाँ गेहूँ की लहलहाती फसल खड़ी थी। एक–एक दाने ने न जाने कितने दानों को जन्म दे दिया था। सीधी सी बात थी तीसरा राजकुमार उत्तराधिकारी घोषित हुआ।

सरल सी कहानी है ये, या इससे मिलती जुलती कहानियाँ आपने भी पढ़ी होगी लेकिन इसमें जो गूढ़ता है वो यह कि दाने जिनमें जीवन था उन्हें यदि पड़ा रखा तो वो सड़ गए और जैसे ही उनका सही उपयोग हुआ तो उनसे नया जीवन अंकुरित हो गया। मुझे हमेशा लगता है कि हमारे डोनर भी उन गेहूँ के दानों की तरह हैं जो नया जीवन पल्लवित कर रहे हैं और सच मानें ऐसा हम दिल से महसूस करते हैं और मैं चाहती हूँ कि आपको ये एहसास होवे कि आप भी जीवन दे रहे हैं, पूरी दुनिया की 700–750 करोड़ की आबादी में कितने लोग हैं जो दूसरों के लिए सोचते हैं, और उन थोड़े लोगों में आप भी हैं। मैंने बहुत से लोगों को प्रवचन देते सुना है जो कहते हैं कि धन की अभिलाषा मत करो लेकिन उनके खुद के अंदर धन की लोलुपता होती है, मेरा मानना यह है कि अच्छी जीवन शैली पर सबका अधिकार है और दान भी तब देना चाहिए जब कोई अपने और परिवार की आवश्यकताओं को अच्छे से पूरा कर ले। लेकिन मैंने पिछले 20–25 सालों में नारायण सेवा और तारा में हजारों ऐसे लोगों को देखा है जो अपनी आवश्यकताओं में कमी करके दान देते हैं। उनका जो भाव है वो जीवन देने का भाव है। ईश्वर ने आपको जो जीवन दिया है आप उस जीवन का सदुपयोग कर कई लोगों को जिन्दगी दे रहे हैं।

जिन्दगी देने का तात्पर्य केवल जन्म और मृत्यु से नहीं है वरन् आप किसी गरीब बुजुर्ग की आँखों में रोशनी दे रहे हों, या वृद्धाश्रम के बुजुर्गों को अंत समय में स्वाभिमान भरा आश्रय या विधवा महिलाओं को सहायता या तृप्ति में तृप्त करने वाला राशन तो ये भी तो जीवन देना ही है। सृष्टि में जितनी भी सजीव जातियाँ हैं उनमें सबसे बुद्धिमान मनुष्य है तभी तो वो सोच सकता है कि अपने से हट कर दूसरों के लिए भी कुछ किया जाए लेकिन शायद ईश्वर यह सौभाग्य भी सबको नहीं देता है बस आप जैसे कुछ भाग्यशाली लोग ही हैं जो अपने जीवन से जिन्दगी देकर खुशियों की फसल उगा रहे हैं....

आप सभी दानदाताओं को मेरा सादर प्रणाम....

कल्पना गोयल

सरल स्वभाव वाला सदा समाधान स्वरूप होगा।

ऐ मेरे वतन के लोगों...

लता जी का ये गाना कहते हैं नेहरू जी की आँखों में पानी ले आया था और हम सब भी जब भी ये गाना सुनते हैं हमारे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। इसी गाने की एक पंक्ति ये भी है कि ''जब देश में थी दीवाली वो खेल रहे थे होली'' इस होली पर भी ऐसा माहौल बना कि ऐसा न हो कि हम सब रंगों में नहाए हों और कोई हमारी रक्षा में लहू से नहा ले। हालांकि यह लेख लिखे जाने तक स्थिति बेहतर लग रही है और लगता है कि होली सिर्फ रंगों की ही होगी। हमारे विंग कमांडर अभिनन्दन शान से वापस आ गये हैं लेकिन कुछ घंटे जब वो पाकिस्तान में थे हम सब की सांसें रुकी हुई थी ऐसा लगा कि हमारे परिवार का कोई बच्चा सीमा पार फँस गया हो, दुश्मन की कैद में उस बहादुर पायलट ने जिस तरह से जवाब दिए हर भारतीय को लगा कि जैसे वो खुद सीना तान कर जवाब दे रहा हो और जब विंग कमांडर अभिनन्दन का मारपीट के बाद खून से सना चेहरा देखा तो हम सबके चेहरे पर भी उन खरोंचों का एहसास आ गया। जब हमें इतनी पीड़ा है तो उन परिवारों की पीड़ा का तो अंदाजा हम लगा भी नहीं सकते जिनके बच्चे फौज में हैं। युद्ध की हर आहट उस माँ, पत्नी, पिता सबका दिल धड़का देती होगी जिनके बच्चों फौज में होते हैं। हमारे फौजियों की मानसिकता का तो क्या कहें छोटी सी तनख्वाह में अपने प्राणों की बाजी लगाने में वो सोचते नहीं हैं, क्या जज्बा होता होगा कितनी ताकत होती होगी उनके दिलों में।

1999 में जब कारगिल युद्ध हुआ तो पहाड़ी की चोटियों पर दुश्मन था और हमारे फौजी नीचे से ऊपर चढ़ रहे थे गोलियों की बौछार में, यानी की निश्चित मौत थी तो भी वो ही जोश था, उस समय टी.वी. पर या अखबारों में तिरंगा उठाए पहाड़ की चोटियों पर विजय का निशान बनाए सैनिकों की खुशी देखकर मन ये ही सोचता था कि ये लोग किस मिट्‌टी के बने हैं कि इनको डर ही नहीं लगता। मेरे बहुत से मित्र और मिलने वाले जब कहते हैं कि युद्ध होना चाहिए और अब तो दुश्मन को सबक सिखा ही देना चाहिए, मुझे भी ऐसा ही महसूस होते हुए भी कहा नहीं जाता कि युद्ध हो जाए, हमेशा यही सोचता हूँ कि उस माँ की क्या हालत होगी जिसका बेटा फौज में है। हम लोग तो अपने बच्चों को अच्छी नौकरी या व्यापार में लगाने जाएँ और फिर बातें युद्ध की करें तो थोड़ा अजीब हो जाएगा। हाँ ये जरूर है कि मैंने हर फौजी और यहाँ तक की शहीद के परिवार वालों को भी यही कहते सुना है कि दुश्मन को सबक सिखाओ। ईश्वर शायद फौजियों के परिवार वालों को भी अलग ही मिट्टी का बनाता है।

भारतीय सभ्यता तो हमेशा से शांति की हिमायती रही है जहाँ महावीर, गौतम बुद्ध और गाँधी जैसे महापुरुष हुए हैं लेकिन हमारे हुक्मरान भी तभी युद्ध की संभावनाओं पर जाते हैं जब पानी सिर के ऊपर से गुजर जाता है, हमने कभी आगे होकर युद्ध नहीं किया लेकिन हमारी विनम्रता को हमारी कमजोरी समझा गया और ऐसा लगा कि ये होली लाल रंग की होगी।

ईश्वर की कृपा है कि स्थितियाँ बेहतर होने लगी हैं और शायद आगे और बेहतर हो जायें। हम तो ये प्रार्थना ही कर सकते हैं कि कुछ सिरफिरे जो जेहाद के नाम पर ये सब कर रहे हैं उन्हें सद्‌बुद्धि आए। ये जो पिछले कुछ दिन थे वो इतने उथल पुथल भरे थे कि तारांशु में भी आप से इस विषय में बात करके मन कुछ हल्का हो गया।

आप सभी को होली की शुभकामनाएँ...

दीपेश मित्तल

तारा संस्थान की तृप्ति योजना : लाभ से पूर्व एवं लाभ के बाद की स्थिति : 1

तारा संस्थान द्वारा दीन–दुखियों एवं समाज के वंचित वर्गों हेतु चलाई जा रही अनेक योजनाओं में एक विशेष रूप से उल्लेखनीय है : तृप्ति योजना इन योजना के अन्तर्गत तारा संस्थान के स्वयं सेवी दूर–दराज के अन्दरूनी गाँवों या शहरों में भी ऐसे वृद्ध व्यक्तियों की पहचान करती है जो निःसहाय व बेसहारा हैं, जिनको कोई मदद कर वाला नहीं हो एवं जिन्हें दो जून की रोटी भी समय पर उपलब्ध नहीं हो पाती है क्योंकि वृद्धावस्था अथवा अन्य कारणों से वे कोई काम नहीं कर पाते हैं। ऐसे वृद्धों व जरूरतमंदों की पहचान कर, संस्थान उन्हें मासिक राशन आदि व 300 रु. नकद उनके घर द्वार पर पहुँचाता है। तृप्ति योजना की इस पहल से यह तो सुनिश्चित हो जाता है कि निःसहाय वृद्ध जीवन के इस मोड़ पर कम–से–कम भूखे तो न मरें।

तारांशु के इस अंक में हम ऐसे ही कुछ तृप्ति योजना के लाभार्थियों से विशेष बातचीत करके यह जानने की कोशिश करते हैं कि तृप्ति योजना के प्राप्त होने से पूर्व एवं उसके पश्चात् इन लोगों को स्थिति क्या भी एवं इससे उनके जीवन में किस प्रकार का बदलाव आया।

हमने इन लाभार्थियों से विभिन्न प्रश्न पूछे जो कि निम्न प्रकार से थे एवं तत्पश्चात् उनकी कहानी उन्हीं की जुबानी प्रस्तुत है।

- तृप्ति योजना के लाभ मिलने के पूर्व आपकी आर्थिक स्थिति क्या थी, कमाई का क्या जरिया था।
- आपके परिवार में कितने सदस्य थे एवं उनका भरण–पोषण कैसे होता था, अब वर्तमान में कितना परिवर्तन आया है।
- आपको तृप्ति योजना के लाभ से पूर्व अपने छोटे–छोटे बच्चों की छोटी–छोटी मांगों को कैसे पूरा करते थे, अब क्या स्थिति है?
- तृप्ति लाभ से पूर्व आप स्वयं अथवा परिवार पर आई मुसीबत का सामने कैसे करते थे? क्या पूजा पाठ या मंदिर जाने से कुछ राहत मिलती थी।
- वर्तमान की तृप्ति योजना से आपको और किस प्रकार की अपेक्षा है? इसे कैसे बेहतर बनाया जा सकता है?

तृप्ति योजना सेवा (प्रति बुजुर्ग खाद्य सामग्री सहायता)
01 वर्ष - 18000 रु., 06 माह - 9000 रु., 01 माह - 1500 रु.

सबके प्रति कल्याण की भावना रखो।

श्रीमती शबनम बानो

पहले : साल भर पहले तक मैं दो लड़के व एक लड़की तथा पति के साथ एक छोटे सी दुकान – केबिन में रहते थे जिसमें न तो पानी की व्यवस्था थी न ही लाइट की। एक बड़ी बच्ची को ननद पालती थी क्योंकि उसका खर्चा उठाना हमारे बस में नहीं था। मेरे पति मैकेनिक का काम करके कुछ गुजारे लायक कमा लेते थे लेकिन फिर उन्हें एक दिन मिर्गी का दौरा पड़ा और अचानक घर से गायब हो गए। मैं अकेली मुसीबत में पड़ गई, कैसे बच्चों को पालू–पोंसू और स्कूल भेंजू? ऊपर से सास भी साथ रहती थी। जिनकी देखभाल और दवाइयाँ आदि की जरूरत पड़ती रहती थी। तो फिर मुझे जैसे–तैसे निकट के एक अस्पताल में साफ–सफाई का काम मिला तो सांस में सांस आई पर इतनी जिम्मेदारियों पर मेरी 3000 रु. की नौकरी से कैसे काम चलता? ऊपर से बच्चों की कुछ न कुछ फरमाईश जैसे नए कपड़े दिला दो या चॉकलेट आदि। कपड़ों के नाम पर तो इधर–उधर से मांग कर उनको फुसला देती पर चॉकलेट, मिठाई आदि की मांग पर उन्हें दाँत खराब होने के बहाने से टाल देती थी।

बाद में : फिर एक दिन आप लोगों (तारा संस्थान) की तरफ से तृप्ति योजना में मदद मिलती शुरू हुई तो राहत मिली। आपकी मदद की वजह से अब मैं अपने तीनों बच्चों को खिला–पिला सकती हूँ और स्कूल की पढ़ाई का खर्चा भी निकल रहा है बच्चों की फरमाईश जैसे चॉकलेट आदि में अब मन मसोस कर टालना नहीं पड़ता। तारा संस्थान की मदद से मैं अब एक पक्के मकान में किराए से रह पा रही हूँ। ऊपर से बड़ी बच्ची को भी संस्थान में नौकरी दे दी है तथा सास का बड़ा बोझ था वह भी उतर गया। तारा संस्थान ने मेरी सासू को आनन्द वृद्धाश्रम में भर्ती कर दिया है। इस प्रकार तारा संस्थान की तृप्ति योजना की वजह से मेरा जीवन बिल्कुल बदल कर बहुत बेहतर हो गया। खुदा आपको तरक्की दे, बहुत–बहुत शुक्रिया।

श्रीमती लीला बाई

पहले : मेरे पति की लगभग 40 साल पहले ही मृत्यु हो गई, कोई सहारा नहीं था, एक लड़का है वह भी शराब पीकर पड़ा रहता है तो मैं अपनी रोटी हेतु कचरा बीन कर या बर्तन मांजकर काम चलाती थी। कई बार एक बार का खाना भी मुश्किल हो जाता था। ईश्वर के सहारे ही जीवित थी।

बाद में : आपने 2 साल पहले मुझे खाने–पीने और अन्य सामान के अतिरिक्त 300 रु. देना आरम्भ किया तो अब कम से कम पेट भर खाना तो खा लेती हूँ। संतुष्ट ही और जीवन आपके सहारे कट ही रहा है। बड़ी मेहराबानी है इसके अलावा और क्या चाहिए, दाल–रोटी तो मिल ही रही है। भगवान आपका बहुत–बहुत भला करें, आप बड़ी भलाई का काम कर रहे हो।

श्रीमती गोपी बाई

पहले : मेरे पति महाराज (खाना बनाने वाले) का काम करते थे लेकिन 7–8 वर्ष पहले एक दुर्घटना में उनकी मृत्यु हो गई तो समय खराब आ गया। 3 संतानों को लेकर कई महीनों तक घर में मायूस बैठी रही फिर छोटा–मोटा घरेलू काम काज शुरू करके गुजारा चलाने की कोशिश करने लगी। बेटियों की जैसे–तैसे शादी हो गई और बेटा मेरे साथ न रहकर वल्लभनगर में अपने मामा के घर रहता है उसकी तरफ से किसी प्रकार की मदद नहीं है। इसी प्रकार संघर्षमय जीवन चल रहा था।

बाद में : फिर 6–7 साल पहले से आपने (तारा संस्थान) ने महीने–महीने का राशन और 300 रु. नकद देना चालू किया तो लगा कि मुझ अकेली बुढ़िया का गुजारा तो जैसे–तैसे हो ही जाएगा। पहले जब खाने–पीने की व्यवस्था नहीं हो पाती थी तो बड़ी बेटी के यहाँ चली जाती थी पर अब उसकी जरूरत नहीं पड़ती। आप लोगों की मेहरबानी से खाने–पीने की तो चिन्ता नहीं है। अब बुढ़ापा है और अकेलापन भी है घर में और कोई नहीं है पर आस–पड़ोस की हमउम्र महिलाएँ शाम को मोहल्ले के चौक में इकट्ठे होकर मन बहला लेते है। बाकि अब कोई विशेष आवश्यकता नहीं है सिर्फ बीमार पड़ने पर बड़ी परेशानी हो जाती है पिछले दिनों ही गिर पड़ी थी और महीनों तक बिस्तर में अकेला रहता बड़ा पीड़ा दायक था। जहाँ तक तारा संस्थान का सवाल है तो आप लोग मुझे कई सालों से तृप्ति का फायदा दे रहे हैं बहुत–बहुत धन्यवाद, और क्या कहूँ आप लोग बड़े भले हैं।

परीक्षायें ही परिपक्व करने का आधार है।

श्रीमती शहनाज

पहले : लगभग 11 वर्ष पहले मेरे पति की दुर्घटना में मृत्यु के पश्चात् मेरे दो पुत्र मेरे भरोसे ही रह गए तो गुजारा चलाने के लिए बोहरवाड़ी में खाना बनाने का कार्य करके कुछ कमा लेती थी। जहाँ तक बच्चों के राशन पानी व कपड़े लतों की बात है तो रमजान के महीने में समाज के कुछ सक्षम लोग थोड़ी बहुत व्यवस्था कर देते थे। लेकिन बच्चों की कुछ जरूरतों जिनको बाजार से खरीदना होता था तो बहुत मुश्किल होता था और जैसे तैसे उनको फुसला दिया करती थी।

बाद में : तारा की तृप्ति योजना से अब राशन आदि के अतिरिक्त जो नकद मिलता है उससे बच्चों की जेब खर्च की मांग तो पूरी हो ही जाती है 5–10 रु. दोनों बच्चों को रोज दे देती हूँ। इसके अलावा हमारा खाना–पीना तो आपके राशन से तथा रमजान की मदद से चल जाता है सो यह एक बड़ी राहत है। लेकिन अब बच्चे भी 18 व 15 साल की उम्र के हो चुके हैं और खर्चे बढ़ गए हैं जैसे ट्यूशन आदि की बहुत फीस लगती है। स्कूल में कुछ न कुछ चीजों की जरूरत पड़ती ही रहती है जैसे कम्पास बॉक्स या कलर पेन पेंसिलें आदि। लेकिन मेरी सबसे बड़ी समस्या तो घर की है – इस कच्ची झोंपड़ी में हम सब रहते है और बारिश के दिनों में पहाड़ से पानी इसमें घुस जाता है। पहले तो प्लास्टिक का छप्पर था जो आँधी और बारिश में उड़ जाता था तब इसी साल छत पर केलू लगवाएँ हैं पर फिर भी दीवारों से पहाड़ का पानी घुस आता है। आपकी मदद से जीवन में कुछ राहत है पर संघर्ष कम नहीं, हालात अभी भी दयनीय ही है खासकर झोंपड़ी की वजह से।

तृप्ति योजना के कुछ अन्य लाभार्थी

उम्र को जीतने का तरीका

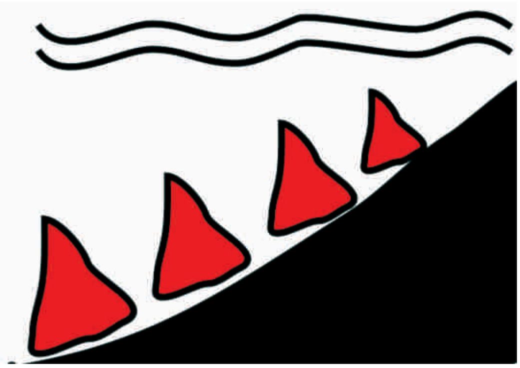

उम्र को कई लोगों ने जीता है। उन्होंने उसे हावी नहीं होने दिया। वे स्वयं को मनाने में कामयाब हुए हैं। जब तक वे कर सकते थे उन्होंने किया और हंसते–हंसाते अलविदा भी कह गये। वे सीखा गये जिंदगी के सबक कि उम्र से जीवन नहीं चलता, जीवन से उम्र चलती है और जीवन चलता हैं इंसान से। जब बुढ़ापा कचोटने लगा तो उन्होंने सोचा कि इसे आजमाया जाये। लगे आजमाने। विचार करते गये, सोचते गये। नये विचार उत्पन्न हुए, नयी सोच विकसित हुई। इस तरह वे उम्र को जीने का तरीका सीखते गये। उम्र गुजर चुकी थी। जितनी बाकी थी उसे शान से जी लिया।

उन्होंने ऐसा कैसे किया आइये जानते हैं:

खुद को समझाया : स्वयं को समझाना सरल नहीं है। बुढ़ापा उम्र का आखिरी पड़ाव माना जाता है। जिंदगी यहां उतनी गति के साथ रोमांचक नहीं होती। वह दुनिया की हलचलों से दूर होने की प्रक्रिया के प्रारंभिक काल में खुद को महसूस करने लगता है। उम्र को जीतने वाले लोगों ने खुद को समझाया कि समय ही तो है, धीरे–धीरे गुजर जायेगा। वे बातें करते रहे स्वयं से ताकि खुद को पूरी तरह महसूस कर सकें। जान सकें कि वे इस उम्र से चाह क्या रहे हैं? क्या उनकी उम्मीदें हैं? क्या उन्हें खुद पर भरोसा है? जानते हैं हम कि सवाल होंगे और उत्तर बिखरे होंगे हमारे आसपास। हल तलाशने की जिम्मेदारी हमारी है। वक्त लगेगा लेकिन तय है कि कई बातें समझ आयेंगी। खुद को समझने की प्रक्रिया जटिल हो सकती है, मगर उसे अपनाने में कोई बुराई नहीं। महसूस नहीं होने दीजिये स्वयं को आप बूढ़े हैं। मत सोचिये कि आप का चेहरा झुर्रियों से भरा है। भूल जाइये कि आप उम्र के आखिरी पड़ाव के करीब हैं। मन से निकाल फेंकिये उस बात को जब आपको किसी ने बूढ़ा कहा था। दिमाग से नकारात्मक बातों को निकालते जाइये, सकारात्मक विचार अपने आप आपको उत्साहित करते जायेंगे। यह सुखद होगा आपके बाकी दिनों के लिए। खुद जान जायेंगे कि आप क्या हैं? खुद मानने लगेंगे कि आपने जीवन को स्वयं के प्रयासों से तब्दील किया है।

हंसने के कारण ढूंढें : हंसी–खुशी जीवन में नया संचार करती है। जीवन जीने का आनंद यहीं छिपा है। बुढ़ापे में हंसने के बहाने ढूंढे जायें तो कोई बुराई नहीं। बच्चों के साथ मिलकर किस्से–कहानियों में समय बिताकर ऐसा किया जा सकता है। उनसे चुटकुले सुनिये। खुद पुरानी मजेदार बातों को बांटिये। वे हंसेंगे तो आपको मुस्कराने की वजह मिल जायेगी। उनकी मुस्कान आपको कुछ वक्त ऐसे संसार में पहुंचा देगी जहां बुढ़ापा आसपास नहीं फटकता। ऐसा संसार जहां उम्र की सीमा नहीं या यों कहें वहां उम्र है ही नहीं। जीवन का उत्सव बुढ़ापे में भी मनाया जा सकता है। यह सच है कि उम्र कोई बंधन नहीं आपके जीने में। उम्र के बंधन को तोड़कर जीवन को अपने तरीके से जिया जा सकता है। ध्यान यही रखना चाहिए कि जिंदगी की पटरी से आप अपनी गाड़ी को उतरने न दें।

बड़े बुजुर्गों का महत्त्व (कहानी)

एक पिता ने अपने पुत्र की बहुत अच्छी तरह से परवरिश की... उसे अच्छी तरह से पढ़ाया, लिखाया, वह पुत्र एक सफल इंसान बना, पिता अब बूढ़ा हो चला था । एक दिन पिता को पुत्र से मिलने की इच्छा हुई और तो पुत्र से मिलने उसके ऑफिस में गया, वहां उसने देखा कि उसका पुत्र एक शानदार ऑफिस का अधिकारी बना हुआ है, उसके ऑफिस में सैकड़ों कर्मचारी उसके अधीन कार्य कर रहे हैं। ये सब देख कर पिता का जाना गर्व से फूल गया! तो चुपके से उसके चेंबर में पीछे से जाकर उसके कंधे पर हाथ रख कर खड़ा हो गया और प्यार से अपने पुत्र से पूछा... "इस दुनिया का सबसे शक्तिशाली इंसान कौन है"? पुत्र ने पिता को बड़े प्यार से हंसते हुए कहा मेरे अलावा कौन हो सकता है पिता को इस जवाब की आशा नहीं थी, उसे विश्वास था कि उसका बेटा गर्व से कहेगा पिताजी इस दुनिया के सब से शक्तिशाली इंसान आप हैं, जिन्होंने मुझे इतना योग्य बनाया ! उनकी आँखें छलछला आई! तो चेंबर के गेट को खोल कर बाहर निकलने लगे! उन्होंने एक बार पीछे मुड़ कर पुनः बेटे से पूछा एक बार फिर बताओ इस दुनिया का सब से शक्तिशाली इंसान कौन है? पुत्र ने इस बार कहा "पिताजी आप हैं, इस दुनिया के सब से शक्तिशाली इंसान'' पिता सुनकर आश्चर्यचकित हो गए उन्होंने कहा " अभी तो तुम अपने आप को इस दुनिया का सब से शक्तिशाली इंसान बता रहे ये अब तुम मुझे बता रहे हो "??? पुत्र ने हंसते हुए उन्हें अपने सामने बिठाते हुए कहा पिताजी उस समय आप का हाथ मेरे कंधे पर था, जिस पुत्र के कंधे पर या सिर पर पिता का हाथ हो तो पुत्र तो दुनिया का सबसे शक्तिशाली इंसान ही होगा ना। पिता की आँखें भर आईं उन्होंने अपने पुत्र को कस कर के अपने गले लगा लिया । सच है जिस के कंधे पर या सिर पर पिता का हाथ होता है, तो इस दुनिया का सब से शक्तिशाली इंसान होता है ! सदैव बुजुर्गों का सम्मान करें! हमारी सफलता के पीछे वे ही हैं। बड़े बुजुर्गों का प्यार आशीर्वाद सदा हम पर बना रहे।

इस मन को मेहमान बना दो तो महान बन जायेंगे।

आनन्द वृद्धाश्रम के बारे में बहुत सुना था : श्री गोवर्धन लाल जी

वृद्धाश्रम बुजुर्गों हेतु भोजन मिति 3500 रु. (एक समय)

लगभग 72 वर्षीय श्री गोवर्धन लाल जी सिर्फ साल भर पहले तक अपना पुश्तैनी कार्य मुढ़े बनाकर साइकल पर बेचा करते थे। फिर उम्र के साथ घुटनों में तकलीफ हो गई तो कार्य भी बंद हो गया क्योंकि मुढ़े बनाने का काम घुटनों के सहारे ही किया जाता है। इसके अतिरिक्त चूंकि गोवर्धन की चारों बेटियाँ शादीशुदा होकर ससुराल में है तो वह अकेले पड़ गए और खाने–पीने का सामान लाने के लिए एक कि.मी. चलना भारी पड़ गया साथ ही आँखों की नज़रें भी बहुत कमजोर हो गई। ऐसी स्थिति में कच्ची बस्ती में रह रहे इस वृद्ध को किसी ने आनन्द वृद्धाश्रम के बारे में बताया, काफी नाम सुना था उन्होंने तो यहाँ आकर प्रवेश ले लिया। अब उनके जीवन में बहुत सुकून एवं सारी व्यवस्था से उनकी बेटियाँ भी प्रसन्न है।

आनन्द वृद्धाश्रम सेवा (प्रतिबुजुर्ग) 01 वर्ष - 60000 रु., 06 माह - 30000 रु., 01 माह - 5000 रु.

गौरी योजना :

तारा संस्थान अपनी गौरी योजना के अन्तर्गत कम उम्र विधवा महिलाओं को रु. 1000 प्रतिमाह पेंशन देती है। इस प्रकार उदयपुर व आस–पास की अनेक ग्रामीण विधवाओं के जीवन में कुछ बदलाव लाने की कोशिश की जा रही है। पेंशन के अतिरिक्ति इन महिलाओं को समय–समय पर कपड़े, बर्तन व सिलाई मशीनें एवं अन्य घरेलू उपकरण भी दिए जाते हैं। नीचे चित्र में ऐसे ही बर्तन वितरण के दौरान एकत्रित गौरी योजना लाभार्थी विधवा महिलाओं के साथ तारा परिवार (पिछली पंक्ति में)

गौरी योजना सेवा (प्रति विधवा महिला सहायता) 01 वर्ष - 12000 रु., 06 माह - 6000 रु., 01 माह - 1000 रु.

दानदाताओं की जय हो : श्रीमती कन्नी बाई

ऑपरेशन से पहले

ऑपरेशन के बाद में

60 वर्षीया कन्नी बाई का एक पुत्र मजदूरी कर घर चलाता है। कन्नी को साल भर से धुंधला दिखने लगा पर, अन्य अनपढ़, ग्रामीणों की भांति इन्होंने भी आँख के ईलाज हेतु कुछ न सोचा या किया। कहीं जाँच नहीं करवाई, सब कुछ भगवान भरोसे वाला मानस था। लेकिन एक दिन निकट के गाँव में तारा नेत्रालय का निःशुल्क नेत्र शिविर लगा तो वहाँ चली गई। जाँच में मोतियाबिन्द पाया गया जिसके ऑपरेशन हेतु उन्हें उदयपुर बुला लिया गया जहाँ सफल ऑपरेशन के पश्चात् वह खुश है कि वह अब पुनः स्पष्ट देख सकती है। कन्नी बाई कहती है "आपकी जय हो।"

कोटि-कोटि धन्यवाद : श्री इच्छा शंकर

70 वर्षीय इच्छा शंकर जी भी कुछ महीनों से नज़र की कमी से जुझ रहे थे लेकिन इधर–उधर के कामों तथा खेती बाड़ी में व्यस्तता के चलते किसी डॉक्टर को नहीं दिखा पाए लेकिन जब गाँव में तारा नेत्रालय का शिविर लगा तो उन्होंने तुरंत जाँच में जाने का फैसला किया क्योंकि उन्होंने तारा संस्थान के बारे में काफी कुछ सुन रखा था, सेवाएँ सराहनीय है ऐसा लोग कहते थे। शिविर में जाँच के पश्चात् उन्हें तारा नेत्रालय, उदयपुर में भर्ती कर ऑपरेशन कर उनकी दृष्टि सुधार दी गई। इच्छा शंकर कहते है कि यहाँ का स्टाफ व डॉक्टर सब अत्यन्त व्यवहार कुशल है "कोटि–कोटि धन्यवाद!"

ऑपरेशन से पहले

ऑपरेशन के बाद में

आपके बाल-बच्चे सुखी रहें : श्री कमल शंकर

ऑपरेशन से पहले

ऑपरेशन के बाद में

अहमदाबाद में कार्यरत कमल शंकर जी उदयपुर के निकट के ही गाँव के मूल निवासी है। उन्हें भी काफी समय से आँखों की समस्या थी पर आर्थिक कारणों से कुछ इलाज नहीं करवा पाए क्योंकि वह उम्र दराज़ होकर परिवार में अकेले ही है सो एक दिन उनके गाँव के परिचित ने उन्हें फोन कर बताया वहाँ गाँव में ही निःशुल्क नेत्र शिविर तारा संस्थान द्वारा लगाया जा रहा है तो कमल जी तुरंत शिविर में जाँच हेतु आ गए है। जाँच पश्चात् मोतियाबिन्द पाए जाने पर उनका तारा नेत्रालय, उदयपुर में बिल्कुल निःशुल्क ऑपरेशन किया गया। कमल शंकर जी की नेत्र रोशनी लौटने पर वे दानदाताओं को दुआ देते हुए कहते है "आपके बाल–बच्चे सुखी रहें।"

नेत्र चिकित्सा सेवा (मोतियाबिन्द ऑपरेशन) 17 ऑपरेशन - 51000 रु., 09 ऑपरेशन - 27000 रु., 06 ऑपरेशन - 18000 रु., 03 ऑपरेशन - 9000 रु., 01 ऑपरेशन - 3000 रु.

लक्ष्यहीन मनुष्य का जीवन कौड़ी तुल्य है।

हमारे मुख्य संरक्षक श्री नगेन्द्र प्रकाश भार्गव सा. एवं धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पा भार्गव के जन्मदिवस पर शतायु होने की शुभकामनाएँ

हमारे मुख्य संरक्षक श्री नगेन्द्र प्रकाश भार्गव सा. एवं धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पा भार्गव के क्रमशः 86वें तथा 82वें जन्मदिवस 9 फरवरी, 2019 के उपलक्ष्य में समस्त तारा परिवार की ओर से हार्दिक बधाई एवं दीर्घायु होने की कामनाएँ प्रेषित की गई।
गौरतलब है कि हमारे मुख्य संरक्षक के सुपुत्र स्व. श्री शिखर भार्गव की स्मृति में तारा संस्थान द्वारा गरीब व विधवा महिलाओं के बच्चों की शिक्षा हेतु शिखर भार्गव पब्लिक स्कूल, उदयपुर में संचालित किया जाता है जिसमें सैकड़ों जरूरतमंद विद्यार्थी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पा रहे हैं।

शिखर भार्गव पब्लिक स्कूल – उदयपुर की एक कक्षा का दृश्य

मस्ती की पाठशाला के बालक गेम्स खेलते हुए

झुग्गी झोपड़ी के 1 बच्चे की शिक्षा सौजन्य सहयोग रु. 12000/- प्रति वर्ष

आनन्द वृद्धाश्रम में होली महोत्सव पर मस्ती की झलक

राग द्वेष के बदले वैराग की भावना रखो।

आँखों से संबंधित रोग

हमारी आँखें अनमोल हैं और इनसे हम यह खूबसूरत दुनिया देखते हैं, लेकिन आँखों के प्रति हमारी थोड़ी सी भी लापरवाही हमें अंधेपन का शिकार भी बना सकती है। हममें से बहुत से ऐसे लोग हैं, जो आँखों की समस्याओं के शुरूआती लक्षणों को अनदेखा कर देते हैं और धीरे–धीरे उनमें यह समस्याएँ गंभीर रूप ले लेती हैं। इसलिए शरीर के अन्य अंगों की तरह आँखों की देखभाल को भी प्राथमिकता देनी चाहिए। आज हम आपको आँखों से संबंधित कुछ सामान्य रोग, उनके लक्षण और उपचार के बारे में बता रहे हैं।

कंजक्टिवाइटिस : यह अत्यंत संक्रामक रोग है। इसका वाइरस या बैक्टेरिया स्पर्श के द्वारा किसी संक्रमित व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुँचता है। पीड़ित व्यक्ति अपनी आँख छूने के बाद जो भी वस्तु या सतह छुएगा, वह संक्रमित हो जाएगी। स्वस्थ व्यक्ति द्वारा वह वस्तु या सतह छूने के बाद आँख को छूने से रोग स्वस्थ व्यक्ति की आँख तक पहुंच जाता है। हवा के द्वारा वाइरस का फैलाव बहुत सीमित ही होता है।

ये हैं कंजक्टिवाइटिस के लक्षण – आँख में खुजली, लाली, चुभन व जलन होना, आँख से कीचड़ निकलना, रोशनी से उलझन होना, आँख में कुछ गिरे होने का अहसास होना।

बचाव के तरीके – जब कंजक्टिवाइटिस तेजी से फैला हो तब जहाँ तक हो सके आँखों को न छुएं। अगर छूना भी पड़े तो हाथों को अच्छी तरह धोकर ही आँख को छुएं या हाथ के पीछे के भाग से आँख को छुएं। किसी अन्य व्यक्ति का तौलिया आदि न प्रयोग करें। कंजक्टीवाइटिस ग्रस्त व्यक्ति द्वारा प्रयुक्त कोई भी वस्तु न छुएं। हाथों को दिन में कई बार साबुन से धोएं।

काले धब्बे यानि फ्लोटर्स : फ्लोटर्स गहरे धब्बे, लकीरें या डॉट्स जैसे होते हैं जो नजर के सामने तैरते हुए दिखते हैं। यह ज़्यादा स्पष्ट रूप से आसमान की ओर देखते हुए दिखाई देते हैं। हालांकि फ्लोटर्स नजर के सामने दिखाई देते हैं परन्तु वास्तव में ये आँख की अंदरूनी सतह पर तैरते हैं। हमारी आँखों में एक जैली जैसा तत्त्व मौजूद होता है, जिसे विट्रियस कहते हैं। यह आँख के भीतर की खोखली जगह को भरता है। जैसे–जैसे व्यक्ति की उम्र बढ़ती है वैसे ही विट्रियस सिकुडने लगता है। इस कारण आँख में कुछ गुच्छे बनने लगते हैं, जिन्हें फ्लोटर्स कहते हैं।

फ्लोटर्स का इलाज – फ्लोटर्स और फ्लैशेस का उपचार उनकी अवस्था पर निर्भर करता है। वैसे तो ये नुकसानदायक नहीं होते पर यह बहुत जरूरी है कि आप अपनी आँखें जरूर चेकअप कराएं कि कहीं रेटिना में कोई क्षति न हो। समय के साथ ज्यादातर फ्लोटर्स खुद मिट जाते हैं और कम कष्टदायक हो जाते हैं, पर यदि आपको इनकी वजह से दिनचर्या के कार्य करने में परेशानी आती है, तो फ्लोटर करेक्शन सर्जरी करवाने के बारे में आप सोच सकते हैं। यदि रेटिनल टीयर (रेटिना में छेद) है तो डॉक्टर आपको लेजर सर्जरी या क्रायोथेरेपी करवाने का सुझाव दे सकते हैं।

मोतियाबिंद : बढ़ती उम्र के साथ होने वाली आँखों की सबसे सामान्य समस्या मोतियाबिंद है। इस समस्या में आँख के अंदर के लेंस की पारदर्शिता धीरे–धीरे कम होती जाती है, जिसके परिणामस्वरूप उस व्यक्ति को धुंधला दिखाई देने लगता है। दरअसल आँखों का लेंस प्रोटीन और पानी से बना होता है। जब उम्र बढ़ने लगती है तो ये प्रोटीन आपस में जुड़ने लगते हैं और लेंस के उस भाग को धुंधला कर देते हैं। मोतियाबिंद धीरे–धीरे बढ़ कर पूरी तरह दृष्टि को भी खराब कर सकता है। डॉक्टरों के अनुसार 50 साल की उम्र के बाद हर व्यक्ति को मोतियबिंद की जाँच के लिए नेत्र चिकित्सक के पास जरूर जाना चाहिए। मोतियाबिंद की चिकित्सा में शल्य क्रिया द्वारा अपारदर्शी लेंस को निकाल कर कृत्रिम पारदर्शी लेंस लगा दिया जाता है। इसके बाद दृष्टि लगभग सामान्य हो जाती है।

मोबियाबिंद के लक्षण – धुंधली या अस्पष्ट दृष्टि रोशनी के चारों ओर गोल घेरा सा दिखना, रात के वक्त कम दिखाई देना, हर वक्त दोहरा दिखाई देना, हर रंग का फीका दिखना।

मोतियाबिंद में सर्जरी – मोतियाबिंद की सर्जरी में सुई के बगैर, टांके के बिना और पट्टी के बगैर ऑपरेशन कर दिया जाता है। इसी कारण ऑपरेशन के बाद मरीजों को अस्पताल में रुकने की भी आवश्यकता नहीं पड़ती। अब ऐसे लेंस नेत्र सर्जनों के पास उपलब्ध हैं, जो सूक्ष्म छिद्र द्वारा प्रत्यारोपित किए जा सकते हैं। इस तरह के ऑपरेशनों को नियंत्रित (कंट्रोल्ड) वातावरण में किया जाता है। इसलिए साल भर इन आपरेशनों को एक समान गुणवत्ता के साथ करना संभव हो गया है। यह जानकारी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है ऐसा इसलिए क्योंकि यह समझना आवश्यक है कि मोतियाबिंद की सर्जरी को किसी भी मौसम में एकसमान सुरक्षित ढंग से किया जा सकता है।

ग्लूकोमा : ग्लूकोमा भी आँखों में होने वाली एक आम समस्या है। इसमें आँख के अंदर का दबाव बढ़ जाता है जिस कारण देखने में मदद करने वाले ऑप्टिक नर्व को नुकसान पहुँचाता है। यदि ग्लूकोमा की चिकित्सा समय रहते ना की जाए तो यह अंधेपन का कारण भी बन सकता है। यह लंबे समय तक चलने वाला रोग है अर्थात् इससे होने नुकसान भी धीरे–धीरे होता है। इसलिए अधिकांश लोग इसे सामान्य दृष्टि की समस्या समझ कर ऐसे ही छोड़ देते हैं, जो हानिकारक हो सकता है। उम्र बढ़ने के साथ ही कॉर्निया की मोटाई कम हो जाती है, इसलिए ग्लूकोमा होने की आशंका भी बढ़ जाती है। ग्लूकोमा की पहचान जितनी जल्दी हो जाये, उतनी अच्छी तरह उसकी रोक–थाम व इलाज हो सकता है। इसका उपचार आइ ड्रॉप्स, लेजर चिकित्सा अथवा शल्य चिकित्सा द्वारा की जाती है।

विनम्र अपील :

जैसा कि आपको विदित है तारा नेत्रालय (उदयपुर, दिल्ली, मुम्बई व फरीदाबाद) जरूरतमंद निर्धनों हेतु आँखों के मोतियाबिन्द के मुफ्त इलाज करते हैं। इसी प्रक्रिया में हमें अनेक महंगी मशीनों व यंत्रों की आवश्यकता पड़ती है वर्तमान में निम्न मशीनों की तुरंत आवश्यकता है, कृपया मुक्तहस्त सहयोग करें।

Auto Kerato Refractometer

ऑटो केराटो रिफ्रैक्ट्रोमीटर

मरीजों के चश्मे के व आँख में लगने वाले लेन्स के नम्बर निकालने के काम आता है।

कीमत रु.

2,00,000/- (दो लाख रुपये)

A-Scan ए-स्केन

इस मशीन के द्वारा मोतियाबिन्द के मरीजों की आँख के प्रत्यारोपित किये जाने वाले लैंस का पॉवर/नम्बर निकाला जाता है।

कीमत रु.

2,20,000/- (दो लाख बीस हजार रुपए)

घोषणा - पत्र

फार्म - 4 (देखिये नियम - 8) (तारांशु के संबंध में स्वामित्व का विवरण और अन्य विशिष्टियां)

प्रकाशन का स्थान : 240 ए, हिरण मगरी, सेक्टर 6, उदयपुर
प्रकाशन की नियत कालिका : मासिक
मुद्रक का नाम : श्री सत्यप्रकाश कुमार शर्मा
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : सागर ऑफसेट प्रिन्टर, इण्डिया प्रा. लि. प्लॉट नं. 518, इकोटेच – III, उद्योग केन्द्र एक्टेंशन – II, ग्रेटर नोएडा, गौतम बुद्ध नगर (उत्तर प्रदेश)
प्रकाशक का नाम : श्रीमती कल्पना गोयल
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : 240 ए, सेक्टर – 06, हिरण मगरी, उदयपुर (राज.)
सम्पादक का नाम : श्रीमती कल्पना गोयल
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : 240 ए, सेक्टर – 06, हिरण मगरी, उदयपुर (राज.)
नाम व पता उन व्यक्तियों का जो समाचार पत्र का स्वामित्व रखते हैं और उनका जो कुल पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक हिस्से के अंशधारी या साझेदार हैं। : श्रीमती कल्पना गोयल, पूर्ण स्वामित्व, 240 ए, सेक्टर 6, हिरण मगरी, उदयपुर (राज.), क्र.सं. 3 व 4 के अनुसार मैं श्रीमती कल्पना गोयल एतद्द्वारा घोषणा करती हूँ कि उपर्युक्त दी गई विशिष्टियाँ मेरी अधिकतम जानकारी में एवं विश्वास से सत्य हैं।
दिनांक : 01.03.2019

कल्पना गोयल, प्रकाशक के हस्ताक्षर

कृपया आपश्री सहमति पत्र के साथ अपनी करुणा - सेवा भेजें

आदरणीय अध्यक्ष महोदया,

मैं (नाम) .... सहयोग मद/उपलक्ष्य में/स्मृति में ....

संस्थान द्वारा संचालित सेवा कार्यों में रुपये .... का केश/चैक/डी.डी. नम्बर ....

दिनांक .... से सहयोग भेजने की सहमति प्रदान करता / करती हूँ।

मेरा पता (नाम) .... पिता (नाम) ....

निवास पता ....

लेण्ड मार्क .... जिला .... पिन कोड .... राज्य ....

फोन नम्बर घर/ ऑफिस .... मो.नं. .... ई-मेल ....

तारा संस्थान, उदयपुर के नाम पर दान - सहयोग प्रदान करें।

हस्ताक्षर

जो सदा सन्तुष्ट है वही सदा हर्षित एवं आकर्षण मूर्त्त है।

मोतियाबिन्द जाँच - ऑपरेशन हेतु चयन शिविर

तारा संस्थान द्वारा निर्धन वृद्ध बन्धुओं की आँखों में सामान्यतः पाये जाने वाले मोतियाबिन्द के निदान और ऑपरेशन हेतु चयन के लिए शिविर आयोजित किये जाते हैं। दूरस्थ एवं ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले मोतियाबिन्द ग्रस्त बन्धुओं की स्थिति अधिक ही पीड़ादायक है, क्योंकि प्रथम तो उन्हें मोतियाबिन्द–ऑपरेशन की सुविधा आसानी से उपलब्ध नहीं है एवं द्वितीय, निर्धनता उनकी चिकित्सा में बड़ा अवरोधक है। तारा संस्थान ने ऐसे निर्धन बन्धुओं की जाँच हेतु शिविर लगाने एवं चयनित मोतियाबिन्द ग्रस्त बन्धुओं के शिविर स्थल के निकटवर्ती कस्बे या शहर में स्थित अधुनातन सुविधाओं से सम्पन्न नेत्र चिकित्सालयों या संस्थान के उदयपुर, दिल्ली, मुम्बई व फरीदाबाद स्थित 'तारा नेत्रालय' में सर्वथा निःशुल्क ऑपरेशन करवाने का कार्य प्रारंभ किया है। निःशुल्क सुविधाओं में मोतियाबिन्द की जाँच, दवाइयाँ, लेंस, ऑपरेशन, चश्मे, रोगियों का परिवहन, भोजन तथा देखभाल आदि सम्मिलित हैं।

दानदाताओं के सौजन्य से माह फरवरी – 2019 में आयोजित शिविरों का संक्षिप्त विवरण

तारा नेत्रालय – उदयपुर, दिल्ली, मुम्बई व फरीदाबाद में आयोजित शिविर :

सौजन्यकर्त्ता : श्री प्रवीण कुमार जैन पुत्र श्री पी.के. जैन एवं परिवार – भीलवाड़ा (राज.), श्री वीरा इण्डस्ट्रीज – दिल्ली 52, मेसर्स राजीव प्लास्टिक प्रा.लि. – मुम्बई (महा.), श्री सी.पी. चड्डा जी एवं सपरिवार – वेस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली 08, श्री रवि तिवारी – शिलॉन्ग (मेघालय), श्री संतोष कुमार जैन एवं श्रीमती राज जैन – खारघर, नई मुम्बई (महा.), श्री केशव गुप्ता जी पुत्र श्री मुकेश गुप्ता जी, श्री एस. एल. गुप्ता जी – सरस्वती विहार, दिल्ली 34,

अन्य दानदाताओं के सौजन्य से देशभर में आयोजित शिविर :

श्री आर.एस. सक्सेना जी एवं सपरिवार – डाबड़ी एक्सटेंशन पालम रोड, नई दिल्ली 45, श्री रुपा जी पत्नी श्री संजीव जी ढाका – सुल्तानपुरी, नई दिल्ली–86, श्रीमती नीता – श्री दिनेश कुमार माहेश्वारी – दिल्ली, नेशनल प्रोग्राम फॉर कंट्रोल ऑफ ब्लाइंडनेस – दिल्ली, वर्धमान प्लाजा – दिल्ली, श्रीमती सुषमा – श्री सत्यभूषण जैन – दिल्ली, श्रीमती लता भाटिया एवं श्री लक्ष्मण दास भाटिया – मुम्बई (महा.), माहेश्वरी सेवा ट्रस्ट (पंजी.) – फरीदाबाद (हरि.)

स्व. सरदार कुलबन्त सिंह चड्डा की प्रेरणा से "The Ponty Chaddha Foundation" के सौजन्य से आयोजित शिविर :

स्थान : सचखण्ड नानक धाम (रजि.), गुरुद्वारा रोड, इन्द्रापुरी, लोनी, गजियाबाद (उ.प्र.)
मदर इण्डिया पब्लिक, जलालपुर–शोभापुर रोड़ (मेरठ रोड हनुमान मंदिर से बम्बा रोड शोभापुर) (उ.प्र.)

इन शिविरों में चयनित सभी रोगियों के तारा नेत्रालय, दिल्ली एवं मुम्बई में निःशुल्क मोतियाबिन्द ऑपरेशन करवाए गए हैं। मानवीय सेवा सौजन्य के लिए तारा संस्थान, उदयपुर, दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी एवम् वेव इन्फ्राटेक, दिल्ली के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता है एवं स्व. सरदार कुलबन्त सिंह चड्डा के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

विजन फाउण्डेशन ऑफ इंडिया : कुल 15 शिविर (देशभर में)

Thanks :

NAMES AND PLACES OF THE DONORS WE ARE GRATEFUL OF

Donors are requested kindly to send their photographs along with donation for publishing in TARANSHU

Mr. Ashwin - Mrs. Dimple Soni
Mumbai

Mr. Jagdish Bhai - Mrs. Anita J. Popat
Mumbai

Mr. Ramesh - Mrs. Hansaben Makwana
Mumbai

Mr. Mukesh - Mrs. Nidhi Tayal
Bhiwani (HR)

Miss Vanshika and Mr. Veer Tayal
Bhiwani (HR)

Mr. Sushil - Mrs. Manorma Ojha
Kolkata

Mr. Nand Kishore - Mrs. Kamla Devi Khandelwal
Balotra - Barmer (Raj.)

Mr. Vimal Chandra - Mrs. Mohni Devi
Kota (Raj.)

Mr. Krishna Kumar - Mrs. Kiran Bala Wig
Chandigarh

Mr. Aadrit and Mr. Aaryav Wig
Chandigarh

Mr. Madan Lal - Mrs. Bhagwati Sharma
Jaipur (Raj.)

Mrs. Veena Kocher & Mrs. Urmila Sharma
Ludhiana (PB)

Mr. Rajesh Khanna & Mr. Satpal Goyal
Patiala (PB)

Mr. Shivkumar - Mrs. Shashi Parthi
Chandigarh (PB)

Mrs. Ram Murti Gupta
Kanpur (UP)

Mrs. Vimla Kole
Mumbai

Mrs. Sarla Aggarwal
Delhi 88

Mr. Jasaswani Gautam
Hoshiarpur (PB)

Bapu Diya Sharma
Ambala (HR)

Mr. Dharam Pal Arya
(Advocate), Karnal

Miss Madhavi Suthar
Udaipur (Raj.)

Mr. Karnidan Parakh
Ahmedabad (Guj.)

Mr. Samarth Holani
Mumbai

Mrs. Mamta Goyal
Gwalior (MP)

Mr. Gitansh Sharma
Panchkula (HR)

"तारा परिवार का सौभाग्य कि आपने अभिनन्दन का अवसर प्रदान किया"

श्रीमती चन्दर कवात्रा
प्रेरक, दिल्ली

श्रीमती अंगुरी गुप्ता एवं श्री दिलीप गुप्ता
जयपुर (राज.)

श्रीमती रामदुलारी – श्री शिवकुमार बंसल
हैदराबाद

श्री पुरुषोत्तम जालान
हैदराबाद

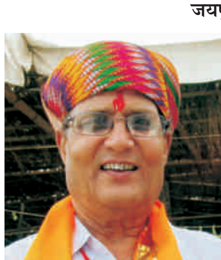
श्री रमेश चन्द्र गहलोत
उदयपुर (राज.)

श्री दीपचन्द बरड़िया
हैदराबाद

श्री अशोक संगीतम
हैदराबाद

हार्दिक श्रद्धांजलि

हमारे भामाशाह श्री मुकेश कोठारी निवासी सूरत के पिता श्री गेहरी लाल जी कोठारी का निधन 8 फरवरी, 2019 को हो गया।
हमारी हार्दिक संवेदनाएँ एवं श्रद्धांजलि।

करुणा की बहती धारा में अपने अविवेक को धो डालो।

Tara

AREA SPECIFIC TARA SADHAKS

Amit Sharma Area Delhi Cell : 07821855747	**Gopal Gadri** Area Delhi Cell : 07821855741	**Sanjay Choubisa** Area Delhi Cell : 07821055717	**Rameshwar Jat** Area Gurgaon, Faridabad Cell : 07821855758	**Kamal Didawania** Area Chandigarh (HR) Cell : 07821855756

Ramesh Yogi Area Lucknow (UP) Cell : 07821855739	**Narayan Sharma** Area Hyderabad Cell : 07821855746	**Vikas Chaurasia** Area Jaipur (Raj.) Cell : 09983560006	**Sunil Sharma** Area Mumbai Cell : 07821855752	**Santosh Sharma** Area Chennai Cell : 07821855751	**Prakash Acharya** Area Surat (Guj.) Cell : 07821855726

Kailash Prajapati Area Mumbai Cell : 07821855738	**Deepak Purbia** Area Punjab Cell : 07821055718	**Pavan Kumar Sharma** Area Bikaner & Nagpur Cell : 07821855740	**Mukesh Gadri** Area Noida, Ghaziabad Cell : 07821855750	**Krishna Gopal Yadav** Area Jodhpur, Kanpur Cell : 07412051606

'TARA' CENTRE - INCHARGES

Shri S.N. Sharma **Mumbai** Cell : 09869686830	Shri Prem Sagar Gupta **Mumbai** Cell : 09323101733	Shri Bajrang Ji Bansal **Kharsia (C.G.)** Cell : 09329817446
Shri Dinesh Taneja **Bareilly (U.P.)** Cell : 09412287735	Shri Anil Vishvnath Godbole **Ujjain (M.P.)** Cell : 09424506021	Shri Vishnu Sharan Saxena **Bhopal (M.P.)** Cell : 09425050136 08821825087

Smt. Rani Dulani
10-B/B, Viceroy Park, Thakur Village,
Kandiwali (W), Mumbai 400 101
Cell : 09029643708

TARA SANSTHAN BANK ACCOUNTS

ICICI Bank (Madhuban)	A/c No. 004501021965	IFSC Code : icic0000045
State Bank of India	A/c No. 31840870750	IFSC Code : sbin0011406
IDBI Bank	A/c No. 1166104000009645	IFSC Code : IBKL0001166
Axis Bank	A/c No. 912010025408491	IFSC Code : utib0000097
HDFC Bank	A/c No. 12731450000426	IFSC Code : hdfc0001273
Canara Bank	A/c No. 0169101056462	IFSC Code : cnrb0000169
Central Bank of India	A/c No. 3309973967	IFSC Code : cbin0283505
Punjab National Bank	A/c No. 8743000100004834	IFSC Code : punb0874300
Yes Bank	A/c No. 065194600000284	IFSC Code : yesb0000651

DONORS KINDLY NOTE

It you do not get any response from any of the above mentioned Mob. numbers, Kindly inform us at Mobile No. 09549399993 and / or 09649399993

INCOME TAX EXEMPTION ON DONATIONS

Donations to Tara Sansthan are TAX-EXEMPT under section 80G of I.T. Act. 1961 at the rate of 50%

Donation to Tara Sansthan may be sent by cheque/draft drawn in favor of Tara Sansthan, payable at Udaipur, OR may be remitted direct into any of the following Bank Accounts, with caopy of pay-in-slip and Donor's address to Tara Sansthan, Udaipur for expediting Donation Acknowledgment Receipt

FCRA

Tara Sansthan is registered under Foreign Contribution Regulation Act (FCRA) with the Govt of India for receiving Donations from Foreign Countries VIDE Registration No. 125690108

HUMANITARIAN ENDEAVORS OF TARA SANSTHAN

TARA NETRALAYA - Udaipur

236, Hiran Magari, Sector 6, Udaipur (Raj.) 313002, Mob. No. +91 9649399993

TARA NETRALAYA - Delhi

WZ-270, Village - Nawada, Opp. 720, Metro Pillar, Uttam Nagar, Delhi - 110059
Mob. +91 9560626661

TARA NETRALAYA - Mumbai

Unit No. 1408/7, 1st Floor, Israni Indl. Estate, Penkarpara, Nr. Dahisar Check-post, Meera Road, Thane - 401107 (Maharashtra),
Phone No. 022-28480001, +91 7821855753

TARA NETRALAYA - Faridabad

Bhatia Sewak Samaj (Regd.), N.H. - 2, Block - D, N.I.T., Faridabad - 121001 (Haryana)
Phone No. 0129-4169898, +91 7821855758

ANAND VRUDHASHRAM - Udaipur

#344/345, Hiran Magri, (In the lane of Rajasthan Hospital, Opposite Kanda House) Sector – 14, J-BLock, Udaipur - 313001 (Raj.)
Mob. +91 8875721616

RAVINDRA NATH GAUR ANAND VRUDHASHRAM - Allahabad

25/39, L.I.C. Colony, Tagor Town, Allahabad - 211022 (U.P.), Ph. No. (0532) 2465035

OM DEEP ANAND VRUDHASHRAM - Faridabad

866, Sec - 15A, Faridabad - 121007 (Haryana)
Mob. +91 7821855758

SHIKHAR BHARGAVA PUBLIC SCHOOL - Udaipur

H.O. Bypass Road, Gokul Village, Sector - 9, Udaipur - 313002 (Raj.), Mob. +91 7229995399

तारांशु (हिन्दी - अंग्रेजी) मासिक, मार्च - 2019
प्रेषण तिथि : 11-17 प्रति माह
प्रेषण कार्यालय का पता : मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर

समाचार पत्र पंजीयन सं. : RAJBIL/2011/42978
डाक पंजीयन क्र. : आर.जे./यू.डी./29-102/2018-2020
मुद्रण तिथि : 9 प्रतिमाह

तारा संस्थान के निःशुल्क मानवीय सेवा प्रकल्प, आपसे प्रार्थित अपेक्षित सहयोग -सौजन्य राशि

नेत्र चिकित्सा सेवा (मोतियाबिन्द ऑपरेशन)

17 ऑपरेशन - 51000 रु., 09 ऑपरेशन - 27000 रु., 06 ऑपरेशन - 18000 रु., 03 ऑपरेशन - 9000 रु., 01 ऑपरेशन - 3000 रु.

नेत्र शिविर सौजन्य

मोतियाबिन्द जाँच-चयन-शिविर आयोजन एवं 30 ऑपरेशन सहयोग सौजन्य, प्रति शिविर - 151000 रु.
चश्मा जाँच - चश्मा वितरण - दवाई सहयोग राशि, प्रतिशिविर - 21000 रु.

तृप्ति योजना सेवा (प्रति बुजुर्ग खाद्य सामग्री सहायता)	गौरी योजना सेवा (प्रति विधवा महिला सहायता)	आनन्द वृद्धाश्रम सेवा (प्रतिबुजुर्ग)	वृद्धाश्रम बुजुर्गों हेतु भोजन मिति
01 वर्ष - 18000 रु.	01 वर्ष - 12000 रु.	01 वर्ष - 60000 रु.	3500 रु.
06 माह - 9000 रु.	06 माह - 6000 रु.	06 माह - 30000 रु.	(एक समय)
01 माह - 1500 रु.	01 माह - 1000 रु.	01 माह - 5000 रु.	

1,50,000 रु. संचित निधि में जमा करवा कर आप एक विधवा महिला को आजीवन 1000 रु. प्रति माह सहयोग कर पाएँगे

सहयोग राशि

आजीवन संरक्षक 21000 रु., अर्जित ब्याज से दानदाता के नाम से इच्छित दिनांक को प्रतिवर्ष 2 मोतियाबिन्द ऑपरेशन,
आजीवन सदस्य 11000 रु., अर्जित ब्याज से दानदाता के नाम से इच्छित दिनांक को प्रतिवर्ष 1 मोतियाबिन्द ऑपरेशन (संचितनिधि में)

दान पर आयकर में छूट : तारा संस्थान को दिया गया दान आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत आयकर में 50% छूट योग्य मान्य है।

निवेदन : कृपया अपना दान - सहयोग नकद या 'तारा संस्थान, उदयपुर' के पक्ष में देय चैक/ड्राफ्ट द्वारा संस्थान के पते पर प्रेषित करने का कष्ट करें, अथवा : अपना दान सहयोग तारा संस्थान के निम्नांकित किसी बैंक खाते में जमा करवा कर 'पे-इन-स्लिप' अपने पते सहित संस्थान को प्रेषित करें ताकि दान - सहयोग प्राप्ति रसीद आपको तत्काल भेजी जा सके।

ICICI Bank (Madhuban) A/c No. 004501021965	IFSC Code : ICIC0000045
State Bank of India A/c No. 31840870750	IFSC Code : SBIN0011406
IDBI Bank A/c No. 1166104000009645	IFSC Code : IBKL0001166
Axis Bank A/c No. 912010025408491	IFSC Code : UTIB0000097
HDFC A/c No. 12731450000426	IFSC Code : HDFC0001273
Canara Bank A/c No. 0169101056462	IFSC Code : CNRB0000169
Central Bank of India A/c No. 3309973967	IFSC Code : CBIN0283505
Punjab Nationa Bank A/c No. 8743000100004834	IFSC Code : PUNB0874300
Yes Bank A/c No. 065194600000284	IFSC Code : YESB0000651

PAN CARD NO. TARA - AABTT8858J

'तारा' के सेवा प्रकल्पों का
कृपया टी.वी. चैनल्स पर प्रसारण देखें :-

'पारस '
रात्रि 8:20
से 8:40 बजे

'आस्था भजन'
प्रात: 8:40 से
9:00 बजे

बुक पोस्ट

Tara
तारा संस्थान
डीडवाणिया (रतनलाल) निःशक्तजन सेवा सदन,
236, सेक्टर - 6, हिरण मगरी, उदयपुर (राज.) 313002
मो. +91 9549399993, +91 9649399993
Email : info@tarasansthan.org, donation@tarasansthan.org
Website : www.tarasansthan.org